अनुमानभेद contd.

(6) प्रकरण - 'यथाऽऽज्ञापयति देवः' देव शब्द के कई अर्थ हैं। देवता, स्वामी, मूर्धाभिषिक्त राजा आदि। किन्तु अब उपर्युक्त वाक्य को किसी अनुचर ने राजसभा में उच्चारित किया है', इस प्रकरण को जानने पर इसका स्वामी या राजा यही विशेषार्थ नियत होता है।

(7) लिङ्ग अर्थात् चिह्न - यथा - कपर्दी भीमः। कपर्दी रूप विशेष चिह्न के कारण 'भीम' शब्द अनेकार्थक होने पर भी 'शङ्कर' का ही अर्थ देता है।

(8) प्रसिद्ध अर्थ वाले शब्द की सन्निधि अर्थ समकालिक उच्चारण या ग्रहण - यथा - 'स्थलारविन्द श्रियम्' इस वाक्य में जो 'श्री' शब्द है, वह 'शोभा' तथा 'लक्ष्मी' दोनों का वाचक होने पर भी 'स्थलारविन्द' पद के समभिव्याहार के कारण 'शोभा' अर्थ तय करता है।

(9) सामर्थ्य अर्थात् शक्ति - यथा - 'मधुना मत्तः कोकिलाः' यहाँ पर 'मधु' शब्द के 'मदिरा', 'शहद', 'बसन्त' आदि अनेक अर्थों के बीच सामर्थ्य के कारण 'बसन्त' रूप अर्थ ही संगत होता है, क्योंकि कोकिल को मतवाला बनाने की शक्ति केवल बसन्त में ही हो सकती है, दूसरों में नहीं।

(10) औचिती अर्थात् युक्तरूपता - 'गौरेका तु मनस्विनः' यहाँ वाणी, किरण, इन्द्रिय, पृथ्वी, गाय आदि के अर्थों को सूचित करने वाला 'गौः' शब्द औचित्य की दृष्टि से 'वाणी' का ही अर्थ देता है, क्योंकि मनस्वियों के लिए वाणी की युक्तता है, दूसरों की नहीं।

(11) देश + काल (12) भाति गगने चन्द्रः' चन्द्र शब्द का चन्द्रमा के अतिरिक्त 'कपूर' अर्थ भी है। किन्तु 'रात्रि' का काल-निर्देश द्वारा इसका अग्नि-अर्थ ही ग्रहण किया जाता है, क्योंकि

Scanned with CamScanner

रात्रि में वही प्रकाशित कर सकता है, सूर्य नहीं। यदि 'दिन' का प्रसंग होगा तो 'सूर्य' ही अर्थ होगा।

(11) - यहाँ पर गगन रूप स्थल के संदर्भ में 'आकाश' अर्थ ही ग्रहण होगा। (12) काल - 'रात्रौ विभावसुः' - इस उदाहरण में -- 11)

(13) व्यक्ति अर्थात् स्त्रीपुंभावादिलिङ्ग - यथा - 'मित्रं भाति' लिंगभेद के इस उदाहरण में 'मित्र' शब्द के दो अर्थ हैं - सखा या साथी।

कारण - (1) नपुंसक लिंग में - सखा
(2) पुल्लिंग में - सूर्य।

उपर्युक्त उदाहरण में 'मित्रम्' नपुंसक लिंग में होने के कारण 'सखा' या 'बन्धु' अर्थ होगा। यदि पुल्लिंग में 'मित्रो भाति' कहा जाय तो उसका अर्थ 'सूर्य प्रकाशित हो रहा है।'

(14) स्वर - उदात्त, अनुदात्त और स्वरित ये स्वर हैं, किन्तु इनका अधिक महत्त्व 'वेद' में है। लौकिक संस्कृत में यह बहुत प्रभावी नहीं है। संयोगादि द्वारा दूसरे अर्थों के रोक दिए जाने पर एक ही अर्थ में निश्चित हुए वाच्यार्थ के अतिरिक्त दूसरा (व्यंग्य) अर्थ जिस शक्ति के द्वारा होता है, वही अभिधामूला व्यञ्जना है। यथा -

गन्तुं प्रवृत्तं समयं विलङ्घ्य...
कुबेरगुप्तां दिशमुष्णरश्मौ
(कुमारसंभव)

दूसरा उदाहरण महाकवि ~~भारवि~~ माघ के 'शिशुपालवधम्' से देते हैं - ~~आच्छादि~~ आच्छादितायत दिगन्तर... नगोशम्)
(शिशुपालवधम् - 6)

Veena Paliwal
Deptt of Skt.
B.A. III Yr.
(Content)

Scanned with CamScanner